❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यद्यद्यामि तदा भर।

अथर्ववेद 20/118/2

हे प्रभो! जो-जो मैं मांगू वह-वह मुझे प्रदान कर।

O God ! shower your blessing on me.

वर्ष 42, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 28 जनवरी, 2019 से रविवार 3 फरवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महाशय धर्मपाल जी को पद्म भूषण सम्मान

सम्मान के लिए नामित किए जाने पर भारत सरकार का हार्दिक धन्यवाद

समस्त आर्यजगत की ओर से महाशय धर्मपाल जी को शुभकामनाएं

समस्त आर्य समाजों से जुड़े लोगों के लिए यह एक गर्व, गौरव और प्रेरणा देने वाली खबर है कि महाशय धर्मपाल जी को भारत सरकार द्वारा नामित किये जाने पर उन्हें गणतंत्र दिवस के अवसर पर पद्मभूषण से सम्मानित किया गया है। ट्रेड एवं इंडस्ट्री में काम के लिए उन्हें यह पुरस्कार मिला है। शून्य से चले महाशय आज शिखर तक कैसे पहुंचे यह कोई रहस्य नहीं हैं बल्कि उनकी मेहनत, कर्त्तव्यनिष्ठा और लग्न का परिणाम है कि एक साधारण सा तांगे वाला आज भारत में व्यापार के क्षेत्र में पद्मभूषण बन गया।

लेकिन उनकी इस प्रसिद्धि की केवल यही एक वजह नहीं है और न ही महाशय जी कार्यों और प्रसिद्धी का उल्लेख कागज के कुछ टुकड़ों पर किया जा सकता है। क्योंकि महाशय जी ने सार्वजनिक जीवन के दायित्व का पालन तो बखूबी किया ही साथ ही समाज में गरीब, बेसहारा लोगों के अनाथालय, स्कूल, अस्पताल जैसे न जाने कितने संस्थानों का निर्माण कराकर समाज को समर्पित किये, जिनकी सूची काफी लम्बी है। इन अनुकरणीय कार्यों के बाद भी महाशय जी की ख्याति यहीं समाप्त नहीं होती, यह टीवी विज्ञापन में आने वाले दुनिया के सबसे अधिक उम्र के स्टार के रूप में भी जाने जाते हैं।

उनकी लंबी उम्र का राज उनका शुद्ध शाकाहारी भोजन और रोजाना किये जाने वाले व्यायाम हैं। पार्क में सैर करने के लिए वह रोज सुबह 4 बजे उठते हैं, वह योगा भी करते हैं वह शाम को भी सैर करने जाते हैं और रात को खाने के बाद भी। बावजूद इसके वह हर रोज कम से कम एक फैक्ट्री में जाते हैं। चाहे फिर वह दिल्ली की फैक्ट्री हो या फरीदाबाद और गुरुग्राम की।

भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में देंगे सम्मान

पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी

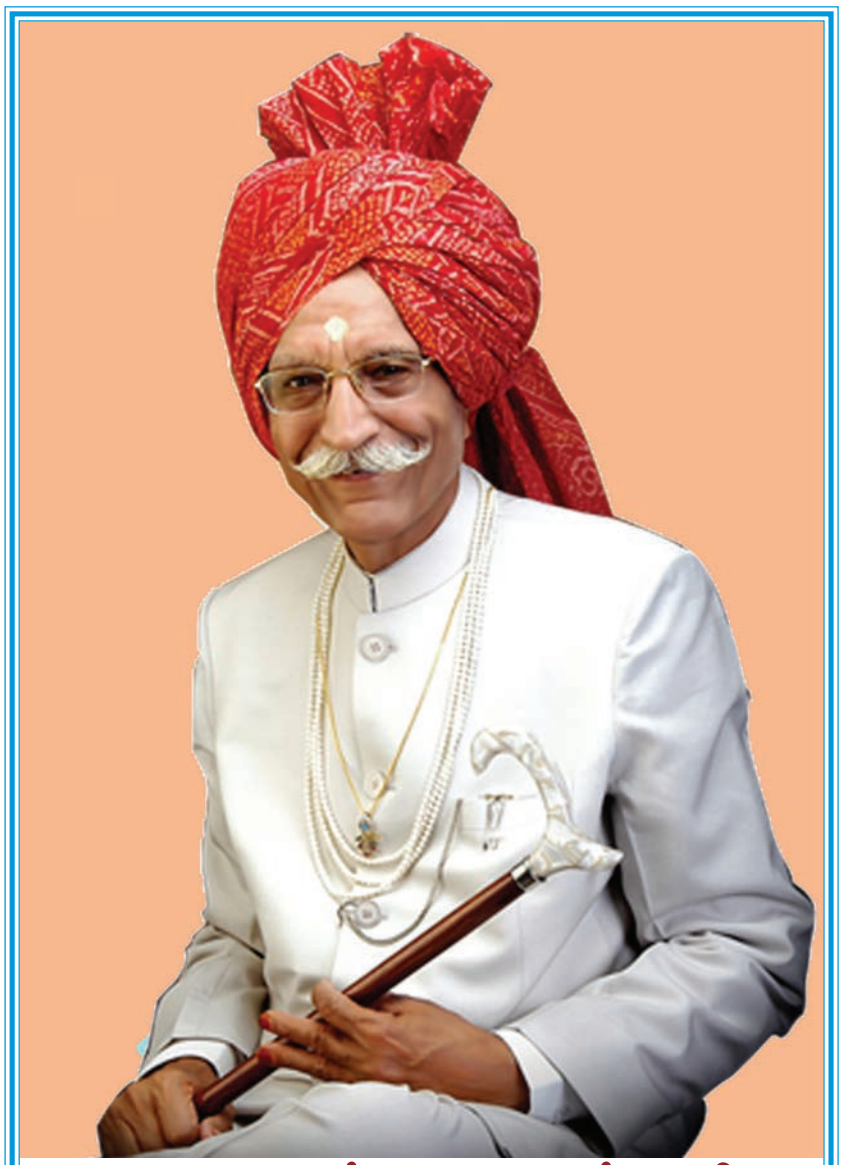

इस सबके बावजूद महाशय जी एक सबसे बड़ी ख्याति यह है कि वह महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित और समाज को श्रेष्ठ मार्ग दिखाने वाले संगठन आर्य समाज के ध्वज को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। हम आर्यजनों के लिए यह गौरव का विषय इसलिए भी है कि भारत जैसे धार्मिक देश में कथित तैतीस करोड़ देवी देवताओं के नाम पर कार्य करने वाले हजारों संगठनों और लाखों स्वयंभू बाबाओं से न जुड़कर महाशय जी ने आर्य समाज की आवाज को न केवल बुलंद किया बल्कि आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में अपने तन, मन और धन से सहयोग दिया। यही कारण है कि आज महाशय जी के आशीर्वाद से देश के पूर्वोत्तर भाग से लेकर मध्य भारत और दक्षिण भारत में वेद रिसर्च सेंटर से लेकर, गरीब आदिवासी बच्चों के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाए मार्ग को प्रेरणादायक मानते हुए स्कूल व कालिजो की स्थापना की। यदि पूर्वोत्तर भारत में आज वेद के मन्त्र गूंज रहे है तो इसका एक बड़ा श्रेय महाशय जी ही को जाता हैं।

हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का सफलतापूर्वक सम्पन्न होना इसके पश्चात आर्य समाज को वैचारिक दुनिया में संवाद के रूप में आर्य मीडिया सेंटर के तौर पर एक हथियार देना महाशय जी की दानवीर ख्याति को दर्शाने के लिए काफी हैं। आर्य जगत से जुड़ें लोगों से निरंतर संवाद आर्य समाज की गतिविधियों की निंरतर जानकारी लेना हम सब लोगों को प्रेरित करना एवं स्वयं 96 वर्ष की अवस्था में एक युवा की भांति साथ चलना ही महाशय जी को दानवीर, कर्मवीर और धर्मवीर बना देता हैं। महाशय जी आर्य रत्न तो थे ही अब उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण से सम्मानित किया जाना हम सब आर्यों को एक नई दिशा, उत्साह और प्रेरणा देगा। हम भारत सरकार का हृदय से आभार व्यक्त करते है साथ ही महाशय जी कर्तव्यनिष्ठा को भी नमन करते हैं। अन्त में एक शायर की कुछ पंक्तियाँ याद आ गयी कि 'खुश रहें तुम्हें देखने वाले वरना किसने खुदा को देखा है।'

प्रयागराज कुम्भ मेला : 15 जनवरी से 4 मार्च, 2019

कुम्भ - 2019 में आर्यसमाज का वेद प्रचार शिविर

संगम तट पर शोभायात्रा एवं भजन संध्या कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हों

वेद-स्वाध्याय

सच्चा पूर्ण आस्तिक ही अहिंसक

उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह।
द्विषन्तं मह्यं रन्धयन् मो अहं द्विषते रधम्।। -ऋ. 1। 50। 13
ऋषिः प्रस्कण्वः काण्वः।। देवता - सूर्यः।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - देखो, **अयम्**=यह **आदित्यः**=आदित्य, परम आत्मसूर्य **मह्यम्**=मेरे लिए **द्विषन्तम्**=शत्रु को, दुष्ट अत्याचारी शत्रु को **रंधयन्**=नाश करता हुआ, वशवर्ती करता हुआ **विश्वेन सहसा सह**=अपने सम्पूर्ण तेज व बल के साथ **उद् अगात्**=उदित हुआ है, इसलिए **अहम्**= मैं **द्विषते**=शत्रु की **मो**=मत **रधम्**=हिंसा करूँ, शत्रु के वशवर्ती न होऊँ।

विनय- मनुष्य तब तक अहिंसक नहीं हो सकता, जब तक वह आस्तिक न हो, जब तक कि उसे परमात्मा के परिपूर्ण और अटल न्याय में विश्वास न हो। नास्तिक सोचता है- दुष्ट अत्याचारी का मैं क्यों न विनाश कर डालूँ जबकि इसके सिवाय और कोई इलाज नहीं है? परन्तु आत्मज्ञान हो जाने पर मनुष्य इस तरह नहीं सोच सकता। परमात्म-सूर्य उदय हो जाने पर सब दृश्य पलट जाता है। तब दीखता है कि किसी की हिंसा करना उसके वशंगत हो जाना है, उसके काबू चढ़ जाना है। शत्रु को अपने काबू करने का एकमात्र उपाय तो उसे अपनाना, उस तक अपनी आत्मा को फैला लेना ही है। आत्म-प्रकाश फैल जाने पर संसार में कोई अनात्म नहीं रहता, कोई शत्रु या द्वेष नहीं रहता। देखते क्यों नहीं, अपने परिपूर्ण तेज और बल के साथ वह 'आदित्य' इस विश्व में उदित हुआ है, अपनी परिपूर्ण सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ता के साथ वह अखण्ड राजा इस विश्व का शासन कर रहा है। वह तो अपने उदित होने, जाग्रत् रहनेमात्र से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की ठीक-ठीक व्यवस्था कर रहा है। उसका सर्वज्ञ तेजस्वी कानून स्वयमेव स्वभावतः सब दण्डनियों को दण्ड देता हुआ, सब हिंसनियों का हिंसन करता हुआ निरन्तर चल रहा है। तो फिर महाज्ञानी और मूर्ख मैं इस संसार में किसी को मारनेवाला कौन होता हूँ? सचमुच किसी की हिंसा करना ईश्वरीय 'कानून को अपने हाथ में लेना है'। हिंसा करना केवल ईश्वरीय व्यवस्था में दखल डालना नहीं है, किन्तु उस व्यवस्था (कानून) का अपराधी बनना भी है। इसलिए उसे उदय हुआ देख लेने पर, उसे सब दण्डनियों का ठीक-ठीक निरन्तर दण्डविधान करता हुआ देख लेने पर, मैं तो अब निश्चिन्त और शान्त हो गया हूँ। मैं अब किसी की हिंसा करने की मूर्खता नहीं कर सकता। मैं देखता हूँ कि मैं उसके सच्चे शासन में यदि कुछ सहायता कर सकता हूँ, उसकी दुष्टों, पापियों, अत्याचारियों के इलाज में कुछ सहायता कर सकता हूँ, तो वह मैं अहिंसा द्वारा, अपने आत्मा के विस्तार द्वारा ही कर सकता हूँ। इस तरह अहिंसा की शरण में पहुँचकर मैं यह भी देखता हूँ कि अब मैं कभी किसी का वशंगत, अधीन व गुलाम भी नहीं बन सकता। सचमुच किसी का 'रंधन', हिंसा करना उसके वशंगत होना है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

धरती के बेटे कौन : आतंकी या सैनिक?

....आंतक के मजहब से अनजान नेता अभिनेता और कथित सामाजिक कार्यकर्ता सामने आकर रोने लगते हैं। यहाँ तक कि 40 लोगों द्वारा राष्ट्रपति को चिट्ठी लिखकर याकूब की फांसी रोकने की अपील तक की जाती हैं। चिट्ठी में फिल्म निर्माता-निर्देशक महेश भट्ट, अभिनेता नसीरुद्दीन शाह, स्वामी अग्निवेश, बीजेपी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा के अलावा जाने-माने वकील तथा सांसद राम जेठमलानी, वृंदा करात, प्रकाश करात और सीपीएम महासचिव सीताराम येचुरी आदि दस्तखत कर रात भर सर्वोच्च न्यायालय में सुनवाई कराते हैं।.....

कई रोज पहले वर्ष 2010 सिविल सेवा परीक्षा में देशभर में अव्वल रहने वाले पहले कश्मीरी आईएएस अधिकारी शाह फैसल ने कश्मीर में कथित रूप से लगातार हो रही हत्याओं और भारतीय मुसलमानों के हाशिये पर होने का आरोप लगाते हुए इस्तीफा दे दिया। इसके बाद जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा ने बयान देते हुए कहा कि आतंकी धरती के बेटे हैं और इन्हें बचाने की कोशिश करनी चाहिए, वह हमारी धरोहर हैं। इसके बाद भी यदि कोई यह जानना चाहता हो कि आतंक का कोई धर्म होता हैं? तो जवाब होगा नहीं। आतंकवादी आतंकवादी होता है। आतंकवादी का कोई धर्म, जाति नहीं होती और वह पूरी तरह मानवता का दुश्मन होता है। और ये मीडिया के सामने दिया जाना वाला वह बयान है जिसे एक नेता राजनीति में प्रवेश करने से पहले रट लेता है।

हालाँकि अपनी राजनीति चमकाने के लिए इस तरह का यह कोई पहला बयान नहीं है। सत्ता की कुर्सी पाने को लालायित जीभ अक्सर ऐसे बयान देती रही हैं। सितंबर 2008 को दिल्ली के जामिया नगर इलाके में इंडियन मुजाहिदीन के आतंकवादियों के खिलाफ की गयी मुठभेड़ जिसमें दो संदिग्ध आतंकवादी आतिफ अमीन और मोहम्मद साजिद मारे गए, इस मुठभेड़ में दिल्ली पुलिस निरीक्षक मोहन चंद शर्मा भी ज्ञाहीद हुए किन्तु देश में व्यापक रूप से विरोध प्रदर्शन किया गया। सपा, बसपा जैसे कई राजनीतिक दलों ने संसद में मुठभेड़ की न्यायिक जांच करने की मांग उठाई। यहाँ तक भी सुनने को मिला था कि तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गाँधी आतंकियों की मौत की खबर सुनकर रोने लगी थी।

मोहन चंद शर्मा के बलिदान को भुला दिया गया और देश की राजनीति से स्वर फूटते रहे कि आतंक का कोई मजहब नहीं। आतंकवादी सिर्फ आतंकवादी होता है, उसकी कोई भाषा नहीं होती। किन्तु फिर बारी आई लोकतंत्र के मंदिर संसद भवन पर हमले के आरोपी आतंकी अफजल गुरु को फांसी देने की तो अचानक फिर राजनीति ने करवट ली और कम्युनिस्ट दलों को अफजल में वोट बेंक दिखाई दिया। वामपंथी लेखिका अरुंधती राय ने तो अफजल गुरु को मासूम बताने में पूरी पुस्तक लिख दी, जिसमें कहा कि अफजल को जेल में तरह-तरह की यातनाएं दी गयीं। उन्हें पीटा गया, बिजली के झटके दिए गये, ब्लैकमेल किया गया और अंत में अफजल गुरू को अति-गोपनीय तरीके से फांसी पर लटका दिया गया। यही नहीं यहां तक कहा गया कि उनका नश्वर शरीर भारत सरकार की हिरासत में है और अपने वतन वापसी का इंतजार कर रहा है।

इस घटना के बाद कुछ समय शांति रही फिर बारी आई जून 2004 को अहमदाबाद में एक मुठभेड़ होती हैं जिसमें लश्कर ए तैयबा के आतंकी इशरत जहां और उसके तीन साथी जावेद शेख, अमजद अली और जीशान जौहर मारे गए थे। जब इस मुठभेड़ का जिन्न बाहर आया तो बिहार राज्य के मुख्यमंत्री ने तो उन्हें बिहार की बेटी तक बता डाला। इशरत के नाम पर एक एंबुलेंस भी चलाई जाती है, जिस पर शहीद इशरत जहां लिखा होता है। जबकि मुंबई विस्फोट मामले के आरोपी डेविड हेडली ने पुष्टि कर दी थी कि इशरत जहां आतंकवादी थी। लश्कर ए तैयबा की वेबसाइट पर भी उसकी मौत पर मातम मनाया गया था। किन्तु इसके बाद भी आतंकवादी अपनी और राजनीति की अपनी चालें चलते रहे।

घड़ी की सुई एक बार फिर आगे बढती है, अब बारी आती है आतंकी याकूब मेमन की फांसी की। वह याकूब जो 1993 का मुंबई हमले में शामिल था और जिसमें 250 से ज्यादा लोग मारे गए थे। बड़ी संख्या में लोग घायल भी हुए थे। देश की आन्तरिक सुरक्षा चरमरा गयी थी और देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई खौफ के साये में सिमट गयी थी। किन्तु जब इस हत्यारे की फांसी की बात आई तो आंतक के मजहब से अनजान नेता, अभिनेता और कथित सामाजिक कार्यकर्ता सामने आकर रोने लगते हैं। यहाँ तक कि 40 लोगों द्वारा राष्ट्रपति को चिट्ठी लिखकर याकूब की फांसी रोकने की अपील तक की जाती हैं। चिट्ठी में फिल्म निर्माता-निर्देशक महेश भट्ट, अभिनेता नसीरुद्दीन शाह, स्वामी अग्निवेश, बीजेपी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा के अलावा जाने-माने वकील तथा सांसद राम जेठमलानी, वृंदा करात, प्रकाश करात और सीपीएम महासचिव सीताराम येचुरी आदि दस्तखत कर रात भर सर्वोच्च न्यायलय में सुनवाई कराते हैं।

समय फिर गति से आगे बढ़ता है राजनेताओं के बयान आतंक और मजहब को लेकर वोट की रोटी सेंकते है। अचानक सेना को बड़ी कामयाबी तब मिलती है जब वह हिजबुल मुजाहिदीन के आतंकवादी कमांडर बुरहान वानी को मार गिराती है। घाटी में आक्रोश उठता है और उस आक्रोश को देश में बैठे कथित बुद्धिजीवी और राजनेता हवा देने लगते हैं। इस बार भारतीय सेना के मनोबल पर पहली चोट करती हुई सीपीएम कार्यकर्ता कविता कृष्णन बुरहान के एनकाउंटर को शर्मनाक बताती हुई कहती है जो मरा है उस पर बाद में चर्चा होगी, लेकिन कोई बुरहान के एनकाउंटर की जांच जरूर होनी चाहिए। यही नहीं दिल्ली में एक युवा छात्र नेता उमर खालिद ने अपने फेसबुक अकाउंट पर बुरहान कि तुलना लैटिन अमेरिकी क्रांतिकारी चे ग्वेरा से करता है तो देश का एक बड़ा पत्रकार राजदीप सर-देसाई बुरहान वानी की तुलना अमर शहीद भगत सिंह से करने लगता है।

शायद इन सब कारणों से ही सुरेश चव्हाण यह सवाल पूछने को मजबूर हुए कि कोई मुठभेड़ शुरू होती है तो आतंकी व सुरक्षा बल आमने-सामने होते हैं। उस समय कोई कुछ भी नहीं कर सकता है। सत्ता पाने के लिए महबूबा ने तो आतंकियों को धरती पुत्र करार दिया है लेकिन यहाँ सवाल यह खड़ा होता है कि हिंदुस्तान तथा हिंदुस्तान के सैनिकों को अपना दुश्मन मानने वाले आतंकी अगर धरती के बेटे हैं तो देश के लिए बलिदान देने वाले सैनिक क्या हैं?

- सम्पादक

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

आबादी तो बढ़ रही है लेकिन किसकी?

आज दुनिया की जनसँख्या सात अरब से ज्यादा है। विश्व भर के सामाजिक चिन्तक इस बढ़ती जनसँख्या पर अपनी गहरी चिंता भी प्रकट कर रहे हैं। जनसंख्या विस्फोट के खतरों की चर्चा हो रही है। तमाम देश, बढ़ती आबादी पर लगाम लगाने की बातें कर रहे हैं और प्रकृति के सीमित संसाधनों का हवाला दिया जा रहा है।

यह तो तय है कि पृथ्वी का आकार नहीं बढाया जा सकता और यहां मौजूद प्राकृतिक संसाधन भी अब बढ़ने वाले नहीं, जैसे पानी, खेती के लायक जमीन। इस कारण सामाजिक चिन्तक चेतावनी दे रहे हैं कि बढ़ती आबादी, इंसानों के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि धरती, कितने इंसानों का बोझ उठा सकती है?

जहाँ ये सवाल पूरी गंभीरता से उठाया जा रहा है वहीं अमेरिकी लेखिका कैथरीन रामपाल ठीक इसके उलट एक दूसरा सवाल लेकर पूरी दुनिया के सामने हाजिर है कि आबादी बढ़ रही है लेकिन किसकी? वे अमेरिका समेत अनेकों देशों में कम हो रही आबादी पर चिंता व्यक्त कर रही है। उसने जापान का उदाहरण देते हुए कहा है कि जापान में मौतें लगभग एक सदी में अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गई हैं। जन्म दर गिर रही है। इन आंकड़ों को एक साथ रखें तो इसका मतलब है कि जापान की आबादी तेजी से कम हो रही है। आगे चीजें बदतर हो सकती हैं। इस जनसांख्यिकीय संकट के कारण आगे चलकर अमेरिका और यूरोप को कुछ सबक मिल सकते हैं।

इस लिहाज से कैथरीन की यह चिंता दिलचस्प है और यदि इसका गहराई से विश्लेषण करें और साथ ही एक छोटा सा उदाहरण रूस से भी अगर ले लिया जाये तो कैथरीन की इस चिंता को आसानी से समझा जा सकता है। सन् 2025 तक रूस की आबादी 14 करोड़, 37 लाख से घटकर 12 करोड़, 50 लाख और सन् 2050 तक केवल 10 करोड़ रह जाएगी। विशेषज्ञों की माने तो रूस में हर दिन दो गांव खत्म हो रहे हैं। पिछले आठ महीनों में ही रूस की आबादी 5 लाख, 40 हजार कम हो चुकी है और पूरे साल में यह कमी 7-8 लाख तक पहुंच जाएगी।

शायद आगे चलकर भारत भी इस समस्या का सामना करने जा रहा हैं। क्योंकि अमेरिका से लेकर जापान और यूरोप की तरह यहाँ भी समस्या समान है। एक तो शादी की दरें गिर रही हैं। आज अधिकांश युवक और युवतियां शादी को एक फालतू का झमेला समझकर प्रेम या लिव इन रिलेशनशिप जैसे रिश्तों को प्राथमिकता प्रदान कर रहें हैं। कुछ अनियमित नौकरियों में फंसे होने के कारण शादी नहीं कर पा रहे है तो कुछ शादी से पहले अधिक आर्थिक सुरक्षा चाहते हैं।

इसके विपरीत यदि सामाजिक और पारिवारिक दबाव में जो शादियाँ की जा रही है उनमें फेमिली प्लानिंग के साथ एक बच्चे पर ही जोर दिया जा रहा हैं। इससे साफ अंदाजा लगाया जा सकता है कि निकट भविष्य में भारत में भी बुजुर्गों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि होने वाली है यानि इसके बाद मृत्यु दर बढ़ेगी और जन्मदर गिरेगी।

अब सवाल यह है कि यदि यह सब है तो फिर आबादी किसकी बढ़ रही है? इसे हम धार्मिक आधार पर सही ढंग से समझ सकते है। इस समय पूरे विश्व में ईसाई धर्म को मानने वाले करीब तैतीस फीसदी लोग है, इस्लाम को पच्चीस फीसदी, हिन्दू सोलह फीसदी और बौद्ध मत को मानने वाले सात फीसदी के अलावा अन्य मतो को मानने न मानने वाले करीब अठारह फीसदी लोग भी हैं।

किन्तु वह अभी इस मोटे अनुमान से बाहर है यदि बढती और घटती आबादी को भारत के ही लिहाज से देखें तो वर्ष 2011 में हुई जनगणना के अनुसार हिन्दू जनसंख्या वृद्धि दर 16.76 प्रतिशत में रहा, किन्तु इसके विपरीत भारत में मुस्लिमों का जनसंख्या वृद्धि दर 24.6 है जो और कही नहीं है।

मुसलमान कम उम्र में शादियाँ करते हुए जनसख्या वृद्धि के अपने धार्मिक आदेश का पालन कर रहे है तथा एक साथ कई-कई पत्नियाँ उनसे उत्पन्न बच्चें विश्व में बढती जनसँख्या में अपनी भागेदारी दर्शा रहे हैं। इस कारण प्यू रिसर्च सेंटर और जॉन टेंपलटन फाउंडेशन की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 60 प्रतिशत मुसलमान वर्ष 2030 तक एशिया प्रशांत क्षेत्र में रहेंगे। 20 प्रतिशत मुसलमान मध्य पूर्व में, 17.6 प्रतिशत अफ्रीका में, 2.7 प्रतिशत यूरोप में और 0.5 प्रतिशत अमेरिका में रहेंगे। अगर मौजूदा चलन जारी रहा तो एशिया के अलावा अमेरिका और यूरोप में भी मुस्लिम आबादी में काफी बढ़ोतरी होगी। दुनिया के हर 10 में से 6 मुसलमान एशिया प्रशांत क्षेत्र में होंगे। भारत अभी मुसलमानों की आबादी के मामले में दुनिया का तीसरा देश है। अध्ययन के मुताबिक, 20 साल बाद भी भारत मुस्लिम आबादी के मामले में इसी स्थिति में होगा।

अमेरिकी अध्ययन के मुताबिक यूरोप में अगले 20 सालों में मुसलमान आबादी 4.41 करोड़ हो जाएगी जो यूरोप की आबादी का 6 प्रतिशत होगा। यूरोप के कुछ हिस्सों में मुस्लिम आबादी का प्रतिशत दोहरे अंकों में हो जाएगा। फ्रांस और बेल्जियम में 2030 तक 10.3 फीसदी मुस्लिम होंगे। अमेरिका में भी मुसलमानों की जनसंख्या दोगुनी से अधिक हो जाएगी। सन् 2010 में अमेरिका में 26 लाख मुसलमान थे जो सन 2030 में बढ़कर 62 लाख हो जाएंगे।

इस सब आंकड़ों की माने तो जब जनसंख्या का यह विशाल बिंदु पूरे विश्व में फैलेगा और जब यह परिस्थिति पैदा होगी तब विज्ञान को चुनौती के साथ-साथ अन्य मतो पर भी सांस्कृतिक और धार्मिक हमलों में तेजी आने की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता। इस कारण आज भले ही यह मुद्दा राजनीति और धर्म निरपेक्षता की आग में फेंक दिया जाये पर वास्तव में यह भविष्य का राजनैतिक और धार्मिक रेखाचित्र खींचता दिखाई दे रहा हैं। - ***राजीव चौधरी***

अमेरिकी अध्ययन के मुताबिक यूरोप में अगले 20 सालों में मुसलमान आबादी 4.41 करोड़ हो जाएगी जो यूरोप की आबादी का 6 प्रतिशत होगा। यूरोप के कुछ हिस्सों में मुस्लिम आबादी का प्रतिशत दोहरे अंकों में हो जाएगा। फ्रांस और बेल्जियम में 2030 तक 10.3 फीसदी मुस्लिम होंगे अमेरिका में भी मुसलमानों की जनसंख्या दोगुनी से अधिक हो जाएगी। सन 2010 में अमेरिका में 26 लाख मुसलमान थे, जो सन 2030 में बढ़कर 62 लाख हो जाएंगे।

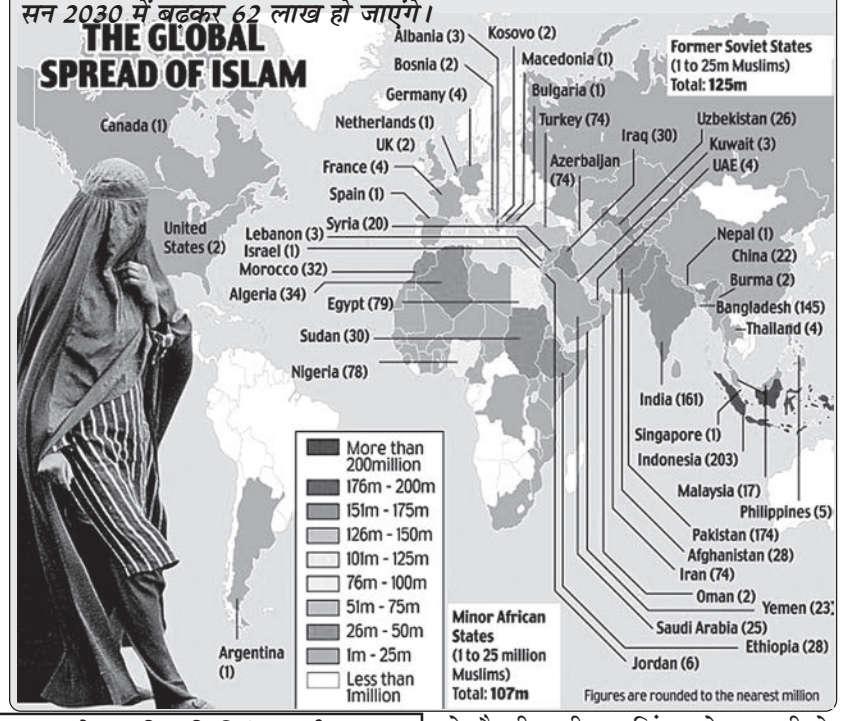

क्रान्तिकारियों की कथा

नेताजी की सिंह गर्जना

गतांक से आगे -

सन् 1937 में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस यूरोप के दौरे पर थे। जनवरी, 1938 में जब वे आयरलैण्ड में थे तभी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने उन्हें हरिपुरा (गुजरात) में होने वाले 51वें अधिवेशन का अध्यक्ष चुन लिया। फरवरी 1938 में वे भारत लौटे तो लग गये युगों से सोई हुई जनता को जगाने के कठिन कार्य में। देश का तूफ़ानी दौरा किया। स्थान-स्थान पर आयोजित सभाओं में यूरोप में होने वाले युद्ध की सम्भावनाएं पेश कीं, साथ ही अपना नज़रिया कि अब ब्रिटेन अपनी नौसेना के अजेय होने का दम नहीं भर सकता। इटली जैसे छोटे देश का हवाई-बेड़ा ब्रिटेन की नौसेना को मिनटों में लंगड़ा कर सकता है। आज ब्रिटेन जैसे शक्तिशाली देश के दोनों पांव फिसलती धरती पर टिके हैं। उसका किसी भी समय पतन अनिवार्य है। अंग्रेज़ों का नग्न-रूप जिस मात्रा में विश्व के सामने आज आया है, वैसा पहले कभी नहीं था।

कांग्रेस का घुटना टेक रवैया उन्हें भाया नहीं। वे अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए अधिक से अधिक छह माह की अन्तिम चेतावनी और दे सकते थे। इससे ज़्यादा मोहलत देना वे राष्ट्र का अपमान समझते थे। उनके दिलोदिमाग़ में तो बस स्वतंत्र भारत की ही तस्वीर साकार होने के लिए छटपटा रही थी। वे बड़े दृढ़-संकल्पी थे। जैसी कथनी, वैसी करनी। कोई भी बाधा-विपत्ति उन्हें उनके इरादों से डिगा नहीं सकती थी।

जब अंग्रेजों को अन्तिम चेतावनी देने का यही प्रस्ताव उन्होंने मार्च, 1939 में त्रिपुरी (म. प्रदेश) कांग्रेस अधिवेशन में दोहराया जिसके वे स्वयं सभापति थे, तो गांधीजी समेत सभी कांग्रेसियों में खलबली मच गयी। हालांकि उन्होंने गांधीजी के 'कैंडीडेट' पट्टाभि सीतारमय्या को गहरी शिकस्त दी थी, फिर भी उनकी शक्ति सीमित कर दी गयी। सभापति पद पर आसीन होते हुए भी उनसे गांधीजी के इशारों पर चलने के लिए कहा गया। सुभाष बाबू के साथ जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसाद, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, गोविन्द बल्लभ पंत, रफ़ी अहमद क़िदवई आदि कांग्रेस के महारथियों ने भी सहयोग नहीं किया। अन्ततः महीने-भर में ही उन्हें इस्तीफ़ा देने के लिए मजबूर कर दिया गया। तब तक कांग्रेस नाम की कोई पार्टी तो थी नहीं; एक प्लेटफ़ार्म मात्र था, जिसमें विभिन्न दलों, विचारधाराओं के व्यक्ति शामिल हो सकते थे।

- क्रमशः

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
5 जनवरी से 13 जनवरी, 2019

वैदिक साहित्य प्रचार के रूप में नौ दिवसीय यज्ञ सम्पन्न

विश्व पुस्तक मेला 5-13 जनवरी 2019 सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। दिनाँक 5-1-2019 को मेले का उद्घाटन महाशय धर्मपाल जी के कर कमलों से हुआ जो हाल नं. 12ए स्टाल संख्या 222-231 में पूरी भव्यता के साथ लगाया गया। इस पुस्तक मेले में हर वर्ष की भांति 10/- में सत्यार्थ दिया गया जिसकी लगभग 11000/- प्रतियां बिकीं।

परोपकारिणी सभा का सत्यार्थ प्रकाश भी इसी स्टाल पर 10/- में बेचा। परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री कन्हैया लाल आर्य एवं श्रीमती ज्योत्सना आर्या एवं अन्य कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्टाल पर लगभग 25-30 कार्य कर्त्ताओं ने प्रतिदिन अपनी सेवाएं दी। जिनके सहयोग व पुरुषार्थ की बदौलत ही यह कार्य सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यकर्ताओं में सर्व श्री सतीश चडढ़ा, वीरेन्द्र सरदाना, एस. पी.सिंह, डॉ. मुकेश कुमार आर्य, शीशपाल कौशिक, देवेन्द्र सचदेवा, नवनीत अग्रवाल, शिव कुमार मदान, रमेश चन्द आर्य, सुरेश राजपूत, गयाप्रसाद वैद्य, क्षेत्रपाल, प्रेम शंकर मौर्य, जगदीश लाल भाटिया, किशन कुमार, सुविज्ञ आर्य, रतन सिंह त्यागी, धमेन्द्र आर्य, सुरेन्द्र चौधरी, मान्धाता सिंह आर्य, हर्ष प्रिय आर्य, आशीष, रवि प्रकाश, प्रद्युम्न आर्य, धर्मवीर आर्य, सुरेश चन्द्र गुप्ता, संदीप आर्य आदि तथा महिलाओं में सर्व श्रीमती हर्ष आर्या, सुषमा शर्मा, एवं नीता आर्या प्रमुख थीं। श्री प्रेम शंकर मौर्य लखनऊ से प्रति वर्ष आते हैं तथा नि:शुल्क सेवा करते हैं। सभी कार्यकर्त्ताओं ने नि:शुल्क सेवा प्रदान की तथा किसी ने भी मार्गव्यय आदि भी नहीं लिए। सभा से श्री रामू, किशन व नारायण का भी मैं धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने समय पर भोजन व्यवस्था बनाकर सहयोग दिया। सभी कार्य कर्ताओं की कड़ी मेहनत का ही परिणाम है कि ठंडी अधिक होने तथा प्रगति मैदान में तोड़ फोड़ के कारण पब्लिक कम पहुँचने के बावजूद लगभग 9 लाख का वैदिक साहित्य बेच कर मेलें में धूम मचा दी तथा वैदिक साहित्य को घर-घर तक पहुँचाने में काफी हद तक सफलता पाई। स्टाल पर विशेष रूप से पधारने वालों में महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली सभा के प्रधान आदरणीय श्री धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, गुरुकुल के आचार्य श्री धनन्जय शास्त्री जी, आचार्य आशीष जी, रविदेव गुप्त जी, चतर सिंह नागर जी, श्रीमती वीना आर्या जी आदि थे। जिनका आशीर्वाद व शुभकामनाएं इस सफलता में अहम हैं। श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी प्रतिदिन सभी कार्य कर्ताओं के लिए समोसे लाते रहे जिससे कार्य कर्ताओं के हौसले व एनर्जी बनी रही। स्टाल पर काफी संख्या में मुस्लिम युवक व युवतियां आई जिन्होंने वैदिक साहित्य एवं सत्यार्थ प्रकाश खरीदा। आचार्य भद्रकाम वर्णी जी की शंका समाधान करने में अहम भूमिका रही। काफी लोग शंका समाधान के बाद सन्तुष्ट हुये। वेदों में काफी लोगों ने रूचि दिखाई तथा वेदों को पसन्द किया और खरीदा भी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मेले में स्टाल लगाने के लिए काफी लोगों ने सभा की प्रशंसा की। सत्यार्थ प्रकाश की विज्ञप्ति वट्सएप एवं फेसबुक पर डालने से देश के कोने-2 से सत्यार्थ प्रकाश मंगाने के लिए फोन आये तथा उनके दिये पते पर पोस्ट अथवा ट्राँसपोर्ट से काफी जगह सत्यार्थ प्रकाश भेजे भी हैं तथा सभी लोगों ने इस विज्ञप्ति को देखकर खुशी जाहिर की तथा बताया कि इस महान पुस्तक को दूर दराज क्षेत्रों में पहुँचाने के लिए आपका धन्यवाद। सत्यार्थ प्रकाश के लिए मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, कलकत्ता, आसाम, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा आदि जगहों से अनेक फोन आये। सत्यार्थ प्रकाश को 10/- रूपए में उपलब्ध कराने में काफी लोगों ने अपना आर्थिक सहयोग दिया। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग के बिना यह कार्य करना सम्भव ही नहीं थ। ट्रस्ट का पूरा सहयोग व आशीर्वाद प्राप्त हुआ। अन्त में मैं सभी कार्य कर्ताओं, कर्मचारियों, सहयोगियों एवं पदाधिकारियों का हृदय की गहराईयों से आभार व धन्यवाद करता हूँ। जिनके बिना इतना बड़ा कार्य कर पाना सम्भव ही नहीं था। इस बार स्टाल पर मुख्य रूप से बिकने वाली पुस्तकों में वेदों के सैट, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जीवनी, यज्ञ विधि, मनुस्मृति, मेदला आदि शामिल थीं। गोविन्दराम हासानन्द, आर्य प्रकाशन, दयानन्द संस्थान, परोपकारिणी सभा, घूड़मल प्रकाशन, रोजड़ प्रकाशन आदि का भी मैं धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने सुन्दर सहित्य उपलब्ध करवाए। कहीं कोई भूल अथवा गलती हुई हो तो उसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

- सुखबीर सिंह आर्य, संयोजक

जब विश्व पुस्तक मेले में वेदों की गलत व्याख्या को लेकर आर्य गुरुकुल के छात्र हुए उग्र

विश्व पुस्तक मेले में चल रहे इस बड़े आयोजन में वेदों और कुरान की शिक्षाओं को लेकर विवाद हुआ। आर्य गुरुकल के लोगों ने जहां वेदों की गलत व्याख्या के जरिए 115 नंबर के स्टॉल पर इस्लाम का महिमामंडन करने का आरोप लगाया तो इस्लामिक ग्रंथों का प्रचार-प्रसार कर रहे संबंधित ट्रस्ट ने अपने स्टाल के पोस्टर फाड़ने की कोशिश और अभद्रता करने का आरोप लगाया। आर्य गुरुकुल के लोगों ने कहा कि उन्होंने सिर्फ पोस्टर्स पर आपत्ति जाहिर की थी कि किसी दूसरे धर्म के ग्रंथों की बातों को तोड़-मरोड़कर अपने धर्म के फायदे के लिए इस्तेमाल करना गलत है।

विवाद की सूचना पर सिक्योरिटी स्टाफ ने पहुंचकर किसी तरह दोनों पक्षों को शांत कराया। तब जाकर उन्होंने आयोजक मंडल से अपनी शिकायत दर्ज कराई। करीब आधे घंटे तक स्टॉल पर विवाद चला।

दरअसल, विश्व पुस्तक मेले में वर्क चौरिटेबल ट्रस्ट ने 115 नंबर का स्टॉल लगाया था। यहां इस्लामिक धर्म और शिक्षा से जुड़े साहित्य उपलब्ध कराए जा रहे थे। स्टॉल पर कई पोस्टर लगाए गए थे जिसमें वेदों की कथित श्रुतियां और कुरान की लाइनों का हवाला देते हुए उनमें समानता की बात कही गई थी। जब वहां वैदिक ज्ञानोदय महाविद्यालय सोनीपत, हरियाणा आर्य (गुरुकुल) के लोग पहुंचे। उन्होंने ट्रस्ट की ओर से लगाए गए उन पोस्टर्स पर आपत्ति जाहिर की, जिसमें इस्लाम की बातों के समर्थन में वेदों की कई लाइनों का हवाला दिया गया था। आर्य गुरुकुल के लोगों ने खुद को वेदों का मर्मज्ञ बताते हुए कहा कि अपने धर्म के प्रचार-प्रसार के मकसद से वेदों की बातों को तोड़-मरोड़कर पेश किया जा रहा है। जिन लाइनों का हवाला देकर जो अर्थ पेश किया जा रहा है, उसका वह मतलब वह कतई नहीं है। यह बात कहते हुए गुरुकुल के लोगों ने मेले में स्टॉल को हटाने की मांग की। इसको लेकर दोनों पक्षों में बहस हो गई जिसे सिक्योरिटी ने आकर शान्त कराया।

देश और समाज विभाजन के षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

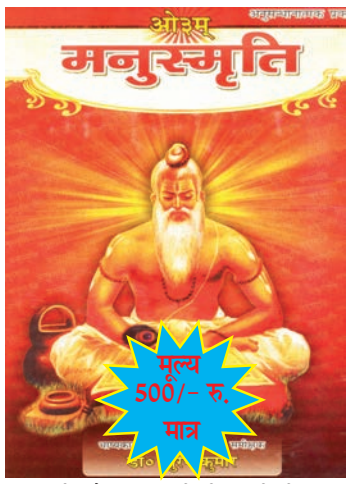

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~680/-~~ 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

महाशय धर्मपाल आर्य मीडिया सैन्टर की तैयारियों का नीरिक्षण

विश्व आर्यसमाज की आवाज में संचेतना लाएगा आर्य मीडिया सैन्टर

इतिहास साक्षी है कि एक युग था जब समस्त विश्व वेदानुयायी था और आर्यो का सार्वभौम अखण्ड चक्रवर्ती साम्राज्य था। वेदानुयायी होने से संसार भर के मानवों के जीवन भी अति मर्यादित थे और मर्यादित जीवन होने से संसार में सर्वत्र सुख-शान्ति का साम्राज्य था।

इस परिवर्तनशील संसार में सदा किसकी बनी रही है? आर्यों के आलस्य से जब वेद विद्या लुप्त होने लगी तो संसार गहरे अंधकार में निमग्न हो गया। भाषा का पतन हुआ, सभ्यताओं का पतन वैदिक संस्कृति और संस्कारों का पतन हुआ तो मनुष्य अपने आचरण से भी पतित हो गया और अनार्यों का संसार में बोलबाला हो गया। परिणामस्वरूप सत्य का विचार जाता रहा और मानवता कराह उठी।

तब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सपना देखा कि यदि सम्पूर्ण विश्व आर्य बन जाए तो पुन मानव का कल्याण स्वत: हो जाएगा। तत्पश्चात दुनियां की सारी बुराइयां मिट जाएंगी और अच्छाई का एक नया सवेरा उदय होगा जो समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन करेगा।

किन्तु आज जब हम विश्व के आर्य बनने की बात कहते हैं तो यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि विश्व को आर्य बनाने के लिए हम किन साधनो का प्रयोग करें। वैदिक ज्ञान की इस धारा का मार्ग क्या हो? हमारा मार्ग दर्शन का माध्यम क्या हो आदि आदि।

इसलिए हम आज वर्तमान को लेकर बात करें तो बेहतर होगा कि भविष्य में किस तरह एकजुटता से कार्य करें अब हमारे सामने सबसे बड़ा विकल्प भी और प्रकल्प भी यही है। इस संदर्भ में चर्चा यही से शुरू की जाये तो आर्य समाज की स्थापना के कारण और उसके उद्देश्य से हम सब भलीभांति अवगत हैं।

आर्य समाज ने अनेकों बुराइयों, अंधविश्वासों और कुप्रथाओं के विरुद्ध बिगुल बजाया। इतिहास इसका गवाह हैं कि आर्य समाज उसमें सफल भी रहा। परन्तु आज समस्या नई-नई सामने है तो पुराने समाधानों से उनका कैसा निराकरण करें?

इसे कुछ इस तरह समझिये कि शतरंज की चालों का जवाब कुश्ती से नही दिया जा सकता, आज वैचारिक शह-मात का खेल है जो मीडिया, इलेक्ट्रोनिक मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से खेला जा रहा है, विचार करना होगा कि साप्ताहिक सत्संग जरुरी है पर हमारा युवा तो इंटरनेट पर चिपका है तो हम उन तक कैसे पहुंचे?

सोचिये युवाओं को विचारधाराओं में किस तरह लपेटा जा रहा है। उन्हें विचारधाराओ के नाम पर जहर पिलाया जा रहा है जो समाज के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालकर उसे बर्बाद कर रहा है, पाश्चात्य संस्कृति की तरह खाओ-पियो मौज उडाओ, कौन देखता है जैसे विचारों से भरमाया जा रहा है। हमारी संस्कृति और संस्कारों पर सामाजिक आतंक की छाया है। युवाओं को सिखाया जा रहा है लिव इन रिलेशनशिप में रहो, क्या जरुरत है शादी की। आईपीसी की धारा-377 हटा दी गयी, समलैंगिकता को अपराध से बाहर कर दिया गया। अप्राकृतिक रूप से यौन सम्बन्ध को बढ़ावा दिया जा रहा है।

माध्यम पोर्न वीडियो परोसने का हो या अश्लीलता से भरे नाटक परोसने का। आधुनिकता के नाम पर रिश्तों नातों की मर्यादा को तोड़ना सिखाया जा रहा है। सोशल मीडिया हो या यूट्यूब ऐसे न जाने आज कितने प्लेटफार्म है जिनके माध्यम से हमारे धर्म और संस्कृति पर निरंतर हमले जारी हैं। एक किस्म से कहें तो हम यज्ञ करते रह गये और विधर्मी हमारी संस्कृति को शमशान तक ले गये।

यही सब सोच-समझकर पिछले कुछ समय पहले महाशय धर्मपाल जी के सामने यह विचार रखा गया कि इससे पहले आर्य समाज पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं में सीमित रह जाये हमें अपने युवाओं और दुनिया तक अगर पहुंचना है, उसे विधर्मी विचारों से बचाना है तो वैचारिक की चाल का जवाब अपने विचारों से देना पड़ेगा। हमें आर्य समाज का मीडिया सेन्टर खड़ा करना पड़ेगा।

महाशय जी ने अपना आशीर्वाद दिया और कार्य शुरू हो गया जो आज लगभग पूर्ण रूप से तैयार है। हालाँकि इस कार्य में हमें विलम्ब हुआ किन्तु अपनी रफ्तार बढ़ाकर अभी भी वैदिक संस्कृति की पावन माला को टूटने से बचाया जा सकता है। क्योंकि वेद के जिस आदेश का अनुपालन करने में प्राचीन वैदिक ऋषियों ने अपने सम्पूर्ण जीवनों को खपा दिया था और फिर भी उनकी यह लालसा सदा बनी रहती थी कि पुन मानव की योनि में जन्म लेकर वेद के इस आदेश का पालन किया जाए हमें उसे बचाने का कार्य करना हैं। हमें वेद बचाने है, वैदिक संस्कृति बचानी है। आर्यत्व बचाना है। स्वामी जी के सपने को साकार करना है। आज महाशय जी ने जो आर्य मीडिया के रूप में हमें एक हथियार प्रदान किया है उससे वैदिक संस्कृति को बढ़ाना है ताकि युवाओं तक हम उस वेद ज्ञान को ले जा सकें जिसकी उन्हें इस बदलते दौर में सबसे बड़ी जरूरत है।

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (मात्र दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दूरभाष: 23360150, 9540040339

Veda Prarthana - II
Regveda - 25/2

One Must Bear the Fruits (Good or Bad) of One's Karmas

- Acharya Gyaneshwarya

Continue from last issue -

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशाति।।
– अथर्व. 12/3/48

Na kilibashamatra nadharo asti na yanmitraih samamamana eti.
Anoonam patram nihitam na etat paktaram pakvah punaravishati.
(Atharva Veda 12:3:48)

A fundamental Vedic principle is that at some stage, one has to bear the good or bad fruits/results of every deed one has performed in the past. These days due to ignorance and false beliefs and traditions, many persons including some of those who consider themselves 'true faithful and believers' all over the world irrespective of their religion, nationality or language have come to firmly accept that your sins can be forgiven by certain beliefs, or worship rituals. Such wrong faiths, beliefs and traditions are promoted all over the world by most (not all) religious leaders and authorities of various temples, mosques, churches, gurud waras and other houses of worship. As a result most common people, as stated earlier in the second paragraph of this mantra, have come to believe that by doing certain penitent worship rituals or donations, they would not have to suffer any punishment for their previously performed bad or sinful deeds. If one carefully looks at the cause of this wrong belief, one would find that in fact, most of the time it is the religious leaders such as dharmacharyas in Hindu religion, senior clergy in Christianity, and senior Mullahs or Ayatollahs in Islam who have sanctioned such beliefs and directly or indirectly make the foundation of such wrong actions. If senior leadership of various religions were to announce in no uncertain terms that various penitent rituals will not prevent the consequences of bad deeds previously done, then it is likely common persons would reduce or refrain from doing bad deedsin the future, otherwise not.

God, our Supreme Father has clearly stated in this Veda mantra the karma principles that the fruits of a person's karmas are not forgiven or diminished as well as our relatives, friends, or others do not share the fruits/results of our karmas. Every person should always remember these principles. Moreover, to decrease bad or sinful deeds in the world various religious leaders in open forums all over the world should clearly state and reinforce these principles.

Dear God with Your grace may we clearly understand the true principles of karmaphal i.e. the inevitability of fruits of our karmas and completely stop doing any bad or sinful karmas ourselves as well as help others in refraining from doing bad karmas in the future.

The following examples will perhaps be useful in illustrating the three levels of karmas. The thought or plan to help others is karma at the mental level. Talking to those one is trying to help and encouraging them is verbal karma. Carrying out action to help them is physical karma. All three levels are essential and should work in synchrony. However, there are times when the karmas may not be in harmony, such as when a person who has no desire whatsoever to help someone else merely goes through the physical motions of pretending to help. This type of action is deception, which is bad karma. A person who spends the day cheating others and then donates some of his ill-gotten gains to charity is not performing good karmas. His rewards will primarily come from the acts of cheating and deception in the guise of charity.

To Be Continue....

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत वाक्य अभ्यासः (76)
नृत् धातुः (नाचना)

गतांक से आगे....

नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

१) मयूरः जलदान् ष्ट्वा नृत्यति।
मोर बादलों को देखकर नाचता है।
२) इमौ युवकौ उत्सवदिने नृत्यतः।
ये दोनों युवक पर्व के दिन नाचते हैं।
३) शिशवः अम्बां ष्ट्वा हर्षेण नृत्यन्ति।
बच्चे माता को देखकर खुशी से नाचते हैं।
४) त्वं कदा नृत्यसि ?
तुम कब नाचते हो?
५) युवां तु गीतानि श्रुत्वा नृत्यथः।
तुम दोनों तो गाने सुनकर नाचते हो।
६) यूयं सम्यक्तया न नृत्यथ।
तुम सब ठीक से नहीं नाचते हो।
७) अहं मित्रैः सह नृत्यामि।
मैं मित्रों के साथ नाचता हूँ।
८) आवां युगपत् नृत्यावः।
हम दोनों एकसाथ नाचते हैं।
९) वयं होलिकोत्सवदिने नृत्यामः च।
हम सब होली पर्व के दिन नाचते हैं।

– *क्रमशः*

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, **मो. 9899875130**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018
कूपनों पर एकत्र की गई राशि यथाशीघ्र भेजें

आप सभी के सहयोग सदभाव के साथ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली का आयोजन सफलता के साथ 25 से 28 अक्तूबर तक स्वर्ण जन्यन्ती पार्क, रोहिणी में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के विशाल कार्य पर बहुत अधिक राशि का व्यय हुआ है। अतः सभी दानदाताओं एवं दान एकत्र करने करने वाले आर्य महानुभावों/आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे अपनी दान राशि तथा कूपनों पर एकत्र की गई दान राशियां कूपन सहित शीघ्रतिशीघ्र सभा कार्यालय में भेज देवें। इसी के साथ जो सज्जन महासम्मेलन में अपनी आहुति अभी तक न दे सकें तो उनसे भी निवेदन है कि वे भी अपनी आहुति आवश्य ही भेजें। आप अपनी दान राशि एवं कूपनों पर एकत्र सहयोग राशि सीधे सम्मेलन बैंक खाते में भी नकद/चैक द्वारा जमा करा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि/एकत्र की गई राशि का चैक **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'** के नाम बनाएं। कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लीप की फोटो व्हाट्सएप्प करें अथवा अपने नाम पते के साथ aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें, ताकि आपको राशि की रसीद भेजी जा सके। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है -

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'
A/c No. 918010068587610 IFSC Code : UTIB0002193
Axis Bank, Cannought Place, New Delhi

खेद व्यक्त : समस्त सम्मानीय पाठकों की सूचनार्थ है कि प्रैस गड़बड़ी के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक सं. 10, दिनांक 21 जनवरी से 27 जनवरी, 2019 प्रकाशित नहीं हो सका। इसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

प्रेरक प्रसंग

मनघड़न्त गायत्री

गतांक से आगे -

बालक निर्धन था। उस युग में पाँच रुपये का मूल्य भी आज के पाँच सौ से अधिक होगा। बालक कुछ झूठ बोल कर कुछ रूठकर लड़-झगड़कर घर से पाँच रुपये ले-आया। रुपये लेकर अगले दिन पण्डितजी ने गायत्री की दीक्षा दी। उनका 'गायत्रीमन्त्र' इस प्रकार था-

'राम कृष्ण बलदेव दामोदर श्रीमाधव मधुसूदरना। काली-मर्दन कंस-निकन्दन देवकी-नन्दन तव शरना। ऐते नाम जपे निज मूला जन्म-जन्म के दुःख हरना।

बहुत समय पश्चात् आर्यपण्डित श्री शम्भूदत्तजी तथा पण्डित बालमुकन्द जी रोहणा ग्राम में प्रचारार्थ आये तो आपने घोषणा की कि यदि कोई ब्राह्मण गायत्री सुनाये तो एक रुपया पुरस्कार देंगे, बनिए को दो, जाट को तीन और अन्य कोई सुनाए तो चार रुपये देंगे। बालक अमरसिंह उठकर बोला गायत्री तो आती है, परन्तु गुरु की आज्ञा है किसी को सुनानी नहीं। पण्डित शम्भूदत्तजी ने कहा सुनादे, जो पाप होगा मुझे ही होगा। बालक ने अपनी 'गायत्री' सुना दी।

बालक को आर्योपदेशक ने चार रुपये दिये और कुछ नहीं कहा। बालक ने घर जाकर सारी कहानी सुना दी। अमरसिंहजी की माता ने पण्डितों को भोजन का निमन्त्रण भेजा जो स्वीकार हुआ। भोजन के पश्चात् चार रुपये में एक और मिलाकर उसने पाँच रुपये पण्डितों को यह कहकर भेंट किये कि हम जाट हैं। ब्राह्मणों को दिया नहीं लिया करते। तब आर्यप्रचारकों ने बालक अमरसिंह को बताया कि जो तू रटे हुए है, वह गायत्री नहीं, हिन्दी का एक दोहा है। इस मनघड़न्त गायत्री से अमरसिंह का पिण्ड छूटा। प्रभु की पावन वाणी का बोध हुआ। सच्चे गायत्रीमन्त्र का अमरसिंहजी ने जाप आरम्भ किया। अविद्या का जाल तार-तार हुआ। ऋषि दयानन्द की कृपा से एक जाट बालक को आगे चलकर वैदिक धर्म का एक प्रचारक बनने का गौरव प्राप्त हुआ। केरल में भी एक ऐसी घटना घटी। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य नरेन्द्रभूषणजी विवाह होने तक एक ब्राह्मण द्वारा रटाये जाली गायत्रीमन्त्र का वर्षो पाठ करते रहे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

आर्यसमाज के अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का पारिवारिक मिलन कार्यक्रम (पिकनिक) सम्पन्न

गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी 2019 के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्यसमाज के प्रमुख अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का पारिवारिक मिलन समारोह (पिकनिक) का आयोजन प्रात: 11 से सायं 4 तक कृणा फार्म, गोल्डन हाइटस, सोहना, गुरुग्राम में बहुत ही रमणीक वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में लगभग 180 आर्यजनों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मन्त्र व भजनों के साथ हुआ। इस अवसर पर सभी सदस्यों की रूचि एवं आयु के अनुरूप विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ तथा विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए। खेलों का संचालन श्री हर्ष प्रिय आर्य व श्रीमती विभा आर्या जी ने किया।

सभी सदस्यों ने प्रात: नाश्ते में पोहा, ब्रैड पकौड़े, मध्यान्हतर में गोलगप्पे व भल्ला-पपड़ी, दोपहर के भाजने में मक्के की रोटी-सरसों का साग, मुरथल वाले भरवां पारांठे तथा कढ़ी चावल तथा शाम को चलते-चलते गाजर का हलवा व चाय-काफी का भरपूर आनन्द लिया।

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने श्री सतपाल भरारा जी का बहुत-बहुत धन्यवाद जिन्होंने अपना बहुत ही सुन्दर व रमणीक फार्म हाउस गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सभा को उपलब्ध कराया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री सुरिन्द्र चौधरी जी, सुरेन्द्र आर्य जी, श्री राजेन्द्र पाल आर्य जी, श्री चन्दर का सरानीय सहयोग रहा।

– *सतीश चड्डा, संयोजक*

आर्यसमाज मॉडल बस्ती का

हीरक जयन्ती समारोह

आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा, नई दिल्ली का हीरक जयन्ती समारोह 28 से 31 मार्च, 2019 तक हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जाएगा।

– *आदर्श कुमार, मन्त्री*

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

आर्यसमाज बिड़ला लाइन कमला नगर में

बसन्त पंचमी उत्सव

आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमला नगर में बसन्त पंचमी उत्सव का आयोजन रविवार 10 फरवरी को किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य कुंवरपाल शास्त्री होंगे। भजन श्री गौरव आर्य एवं प्रवचन श्री दयानिधि सेवार्थी के होंगे। – *नरेन्द्र आर्य, मन्त्री*

आर्यसमाज कीर्ति नगर में

ध्यान योग साधना शिविर

आर्यसमाज कीर्ति नगर में दिनांक 18 से 24 फरवरी तक ध्यान योग साधना शिविर का आयोजन प्रात: 6:45 से 8:15 एवं सायं 7 से 8:30 बजे तक किया जा रहा है। ध्यान साधना का अभ्यास स्वामी ईश्वरानन्द जी के सान्निध्य में किया जाएगा। – *सतीश चड्डा, मन्त्री*

शोक समाचार

श्री पवन गांधी को मातृशोक

आर्यसमाज अशोक नगर, नई दिल्ली के मन्त्री श्री पवन गांधी जी की पूज्या माता श्रीमती लाजवन्ती देवी जी का 25 जनवरी, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 फरवरी को बहावलपुर मन्दिर अशोक नगर में सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य कन्या विद्यालय समिति अजमेर द्वारा

24वां नि:शुल्क रोग निदान शिविर

आर्य कन्या विद्यालय समिति एवं श्री रामजीलाल आर्य कन्या छात्रावास समिति के तत्त्वावधान में हरीश हॉस्पीटल के सौजन्य से वैदिक विद्या मन्दिर, स्वामी दयानन्द मार्ग अलवर में 24वां नि:शुल्क रोग निदान शिविर का आयोजन 3 फरवरी, 2019 को किया जा रहा है। शिविर में हृदय रोग, न्यूरो, किडनी, थायराइड, मधुमेह, गठिया रोग आदि की नि:शुल्क जांच की जाएगी।

– *जगदीश प्रसाद गुप्ता, प्रधान*

योग साधना, स्वाध्याय शिविर

महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास, जिला बुलन्दशहर में 27 मार्च से 2 अप्रैल तक अनुशासित योग साधना, स्वाध्याय, स्वास्थ्य एवं सेवा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। योग साधना पूज्य स्वामी केवलानन्द जी के नेतृत्व में सम्पन्न होगी। अधिक जानकारी के लिए 9452418122, 9758763878 से सम्पर्क करें। – *नरेन्द्र देव वानप्रस्थ, संयोजक*

आर्ष गुरुकुलम् तुरंगा, रायगढ़ का

वार्षिक महोत्सव एवं सामवेद यज्ञ

श्री श्री मल्लिका चतुर्भुज धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित आर्ष गुरुकुल तुरंगा, तह. पुसौर, रायगढ़ (36गढ़) में सामवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एवं वार्षिक महोत्सव का आयोजन 23-24 फरवरी, 2019 को किया जाएगा

– *डॉ. रामकुमार पटेल, मन्त्री*

बिकाऊ है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ हॉस्पीटल की एम्बूलेंस (मारुति वैन) 2004 मॉडल बिकाऊ है। इसके लिए निविदाएं आमन्त्रित हैं। जो महानुभाव खरीदना चाहें वे श्री महेन्द्र सिंह लोहचब, मन्त्री (9999148483) से सम्पर्क करें अथवा aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें।

– *महामन्त्री*

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर 31 मई से 9 जून, 2019 तक महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली अजमेर में लगाया जाएगा। शिविर में कन्याओं को शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल एवं वैदिक सिद्धान्तों, संस्कारों का प्रशिक्षण देकर उन्हें राष्ट्र, समाज व परिवार में अहम् भूमिका निभाने के लिए तैयार किया जाएगा। शिक्षिका, सह शिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएंगी। परीक्षा में उत्तीर्ण आर्य वीरांगनाओं का प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।

– *साध्वी डॉ. उत्तमायति*
प्रधान संचालिका, 9672286863

आचार्य बलदेव स्मृति अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता

पुरस्कार वितरण एवं 51 कुण्डिय यज्ञ

आर्य वीर दल उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित आचार्य बलदेव स्मृति अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह एवं 51 कुण्डीय स्वयं कल्याण यज्ञ 10 मार्च, 2019 को प्रात: 10 बजे से आचार्य स्वदेश जी महाराज के सान्निध्य में सिद्धि विनायक फार्म हाउस, नादा पुल, खैर रोड अलीगढ़ में आयोजित किया जाएगा। पुरस्कार वितरण समारोह दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के सान्निध्य में होगा। – *पंकज कुमार आर्य, अध्यक्ष*

82वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लल्लापुरा वाराणसी (उ. प्र.) का चार दिवसीय 82वां वार्षिकोत्सव काशी अग्रहरी सभा के सभागार में समारोहपूर्वक मनाया गया। समारोह का विधिवत् आरम्भ 21 दिसम्बर को पाणिनी कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा यज्ञ से हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल ततारपुर से पधारे डॉ. ओमव्रत जी ने कहा कि आर्यसमाज में समस्त प्रश्नों का हल विद्यमान है।– *रवि प्रकाश आर्य, व्यवस्थापक*

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 एवं 2020

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थित एवं मूलभूत आवश्यकताओ के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। – *व्यवस्थापक*

सोमवार 28 जनवरी, 2019 से रविवार 3 फरवरी, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 31/1-1/2, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 30 जनवरी, 2019

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

पुस्तकें
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-110001
मो. 9540040339

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्
thearyasamaj.org

एक करोड़ सैंतीस लाख

से अधिक लोगों ने अब तक देखा

आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।
यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्न लिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. **सम्पादक :** जो सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश तथा प्रकाशित होने वाले साहित्य के टाइपिंग, प्रूफरीडिंग, सैटिंग का कार्य निपुणता के साथ कर सके।
2. **डी.टी.पी. ऑपरेटर :** जो सभा के मुखपत्र आर्यसन्देश तथा पुस्तक विभाग के प्रकाशन कार्य को निपुणता के साथ कर सके।
3. **सेल्समैन:** जो विभिन्न स्थानों पर जाकर वैदिक साहित्य के आर्डर ला सके/विक्रय कर सके तथा पुस्तक मेलों में भी जाकर साहित्य प्रचार कार्य को सम्पन्न कर सके।
4. **हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक :** जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें।
5. **एकाउंटेंट :** जो तथा सहयोगी संस्थाओं में दिल्ली तथा दिल्ली से बाहर भी जाकर/वहीं रहकर कार्य कर सकें।

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि/आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

Email:aryasabha@yahoo.com

- महामन्त्री

MUTUAL FUNDS/SIP, INSURANCE, MEDICLAIM, BONDS, PSM, NPS, F.D., TAX SAVING,
आदि के लिए सम्पर्क करें -
धर्मवीर आर्य, 9810216281

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह